Skit

Nyayaadhish

न्यायाधिश : एक प्रतिष्ठा

Lokesh Ch. Lal

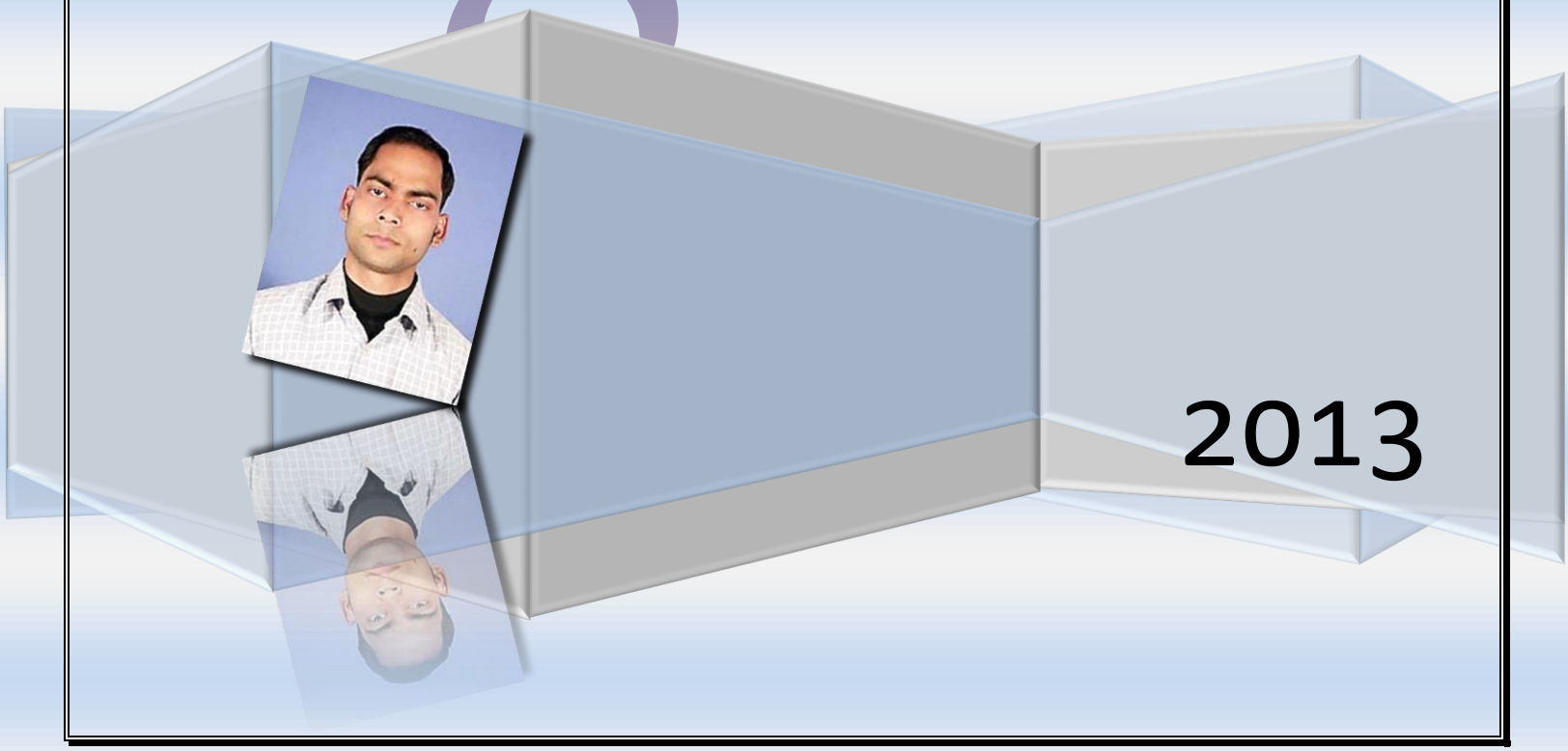

2013

OKU'S

न्यायाधिश

मुख्य पात्र : (4)

सनकी - चाची

बैजू - सनकी चाची का भतीजा

कीरू - बैजू की पत्नी

रामदीन - बैजू का परम मित्र

अन्य पात्र : (11)

साहू चंद

चार गाँव वाले

चार पंच

प्यारी और दुलारी

बैजू के घर का दृश्य

बैजू - (तनावग्रस्त होकर) कीरू, अरे कीरू, कहाँ गए सब के सब ?

कीरू - आई जी, अभी आई । कहो, इतना शोर क्यों मचा रहे हो ?

बैजू - मैं शोर मचा रहा हूँ । अरे शोर तो चाची ने मचा रखा है । सारे मुहल्ले वालों को जाकर कहती रहती है कि मैंने उसे उसका जीना हराम कर रखा है । न निगलने में बन रहा है और न उगलने में ।

कीरू - अजी देखिए । वह जो कह रही हैं, ठिक ही कह रही है ना ।

बैजू - तुम्हारे कहने का मतलब क्या है ? क्या मैंने उसका सबकुछ छीन लिया है । उसने अपनी आधी से ज़्यादी जायदाद अपनी बेटी को दे दी और अगर मैं उसकी देखभाल का जिम्मा लेने की बात न करता तो बचा - कुचा भी वह अपनी बेटी को ही दे देती । मैं उसका भतीजा हुआ तो क्या हुआ, मेरा भी तो कुछ हक़ है ।

कीरू - आपका हक़ जरूर है पर सेवा और सत्कार में । हमारे पास तो ईश्वर का दिया सबकुछ है फिर भी और - और की होड़ में हम अपनी शांति क्यों नष्ट करें ।

बैजू - तुम चुप रहो । तुम कुछ नहीं जानती । मैं अपने लिए सब थोड़ी ही न कर रहा हूँ । हमारे भी बच्चे हैं, उनका भी भविष्य तो हमें देखना है ।

कीरू - अच्छा ठिक है । आप शांत रहिए, मैं आपके लिए पानी लाती हूँ । **[पानी लाने भीतर जाती है और एक लोटा पानी लाती है । तभी बाहर से आवाज़ आती है - बैजू, बैजू भाई हो क्या घर पे]**

बैजू - कौन ? अरे रामदीन । आओ, आओ । कहो कैसे आना हुआ ।

कीरू - मैं अभी पानी लाती हूँ । **[भीतर जाती है ।]**

रामदीन - देख भई बैजू, बुरा मत मानना । पर सनकी चाची इस तरह तेरा नाम लेकर मुहल्ले भर में शिकायत करती है तो मुझे अच्छा नहीं लगता ।

LOKUS

बैजू - मैं भी तो इसीलिए परेशान हूँ । क्या करूँ समझ में नहीं आता ।

[तभी बाहर सनकी चाची की आवाज़ सुनाई पड़ती है]

सनकी चाची - बैजू, रे बैजू बाहर निकल ।

[सुनकर लोग बाहर आते आते हैं, बैजू और रामदीन भी आते हैं]

बैजू - क्या हुआ ? मैंने कोई चोरी किया है क्या, जो बाहर आने से डरूँ ? कहो क्या कहना चाहती हो ?

सनकी चाची - कहना क्या है ? बोल तो ऐसे रहा है जैसे कुछ जानता ही नहीं । मेरा जीना मुहाल कर रखा है । एक-एक दाने के लिए तरसना पड़ता है । दो वक़्त की रोटी मुँह तक नहीं आती । मेरे ही धन पर राज कर रहे हो और मुझे ही तरसा रहे हो । तुम्हें तो स्वर्ग क्या नरक में भी जगह नहीं मिलेगा । कीड़े लगेंगे तुझे कीड़े ।

रामदीन - अरे चाची ऐसा क्यों बोल रही हो । आखिर तो तुम्हारा ही भतीजा है । चलो घर में बैठकर शांति से बात कर मसला हल कर लो ।

बैजू - नहीं रामदीन, कोई मसला हल नहीं होगा । जो होने का था सो हो गया । अब कुछ नहीं होगा ।

दुलारी - हाँ, हाँ, तुम सनकी चाची को क्यों सता रहे हो ? इनका धन वापस क्यों नहीं करते ?

रामदीन - देखो यह घरवालों का मामला है । बाहर वालों को बोलने की बोलने की कोई जरुरत नहीं है ।

प्यारी - तो तुम कौन सा घरवाले हो ? तुम बीच में क्यों बोल रहे हो ?

सनकी चाची - नहीं, मैं अब इस बात का जवाब चाहती हूँ । तुम अपने किए गये वायदे को पूरा करो या तो मेरा सारा धन वापस करो । इसके अलावा मैं कुछ नहीं जानती ।

बैजू - जानने की जरुरत भी नहीं है । कुछ वापस नहीं, कुछ वायदा नहीं ।

प्यारी - तो चाची तुम पंचायत बुलाओ ।

सनकी चाची - तब तो तू अब पंचायत में ही मिलना । कह देती हूँ ।

बैजू - ठिक है तो क्या मैं डरता हूँ । **[सब चले जाते हैं ।]**

पंचायत का दृश्य

[चाची रोती हुई कहती है ।]

सनकी चाची - मेरा न्याय करो भई मेरा न्याय करो । **(गिरकर रोने लगती है । प्यारे और दुलारे उठाती है।)**

पंचगण - आखिर मसला क्या है, पहले ये तो बताओ ।

सनकी चाची - मेरे भतीजे ने मुझे यह कहा था कि वह मेरी सेवा करेगा । अपनी माँ की तरह रखेगा ।

Lokus

कोई भी कमी नहीं होने देगा । और उसने मुझे यह भी कहा था कि मैं अपनी जायदाद उसके हवाले कर दूँ क्योंकि इसकी वह देखरेख करेगा । उसकी चीकनी - चुपड़ी बातों में मैं आ गई । मुझे क्या पता था कि मुझे सूखी रोटी के लिए भी हाथ फैलाने होंगे । रहने के लिए घर के बाहर के कुटिया में सहारा लेना होगा । ऐसा तो कोई पराया भी नहीं करता जैसा कि इसने किया । अब आप ही में से कोई पंच का भार सम्भालकर फैसला कीजिए ।

[पंचगणों में चर्चा होने लगी कि अखिर सरपंच कौन बनेगा।]

बैजू - हाँ, हाँ, सरपंच तो उसे ही बनाओगी जो तुम्हारे हक़ में निर्णय दे । है ना ।

सनकी चाची - नहीं बैजू, मैं तेरी तरह चालाक दिमाग नहीं रखती । जो सही निर्णय होगा वही तो माना जाएगा । तू ही कह किसे सरपंच बनाएगा । अपने ही मित्र रामदीन को बना ले सरपंच, मुझे कोई गिला नहीं होगा ।

[बैजू मन- ही - मन खुश हो गया । वह समझ गया कि अब उसकी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा ।]

बैजू - हाँ, हाँ, रामदीन को ही सरपंच मान लो ।

सनकी चाची - कहो बेटा, तुम्हारा क्या निर्णय है । जो तुम निर्णय लोगे वही मैं मानूँगी ।

रामदीन - [कुछ सोचते हुए] देखो बैजू । मैं इस पद का मर्यादा रखूँगा और जहाँ तक मेरी समझ जाती है, वहाँ तक सही निर्णय लेने की कोशिश करूँगा ।

बैजू - हाँ रामदीन तुम अपना फैसला सुनाओ ।

रामदीन - जहाँ तक हम सभी जानते हैं, तुमने सनकी चाची से वायदा किया था पर अब उसे निभाने में अनकानी कर रहे हो । पंचों का फैसला यह है कि अब चाची बैजू के पास नहीं रहेगी । क्योंकि एक बार जो विश्वास टूट जाता है वह फिर नहीं जोड़ा जा सकता । बैजू को चाची से लिया हुआ धन वापस करना होगा और उसे ऐसा करने के लिए तीन दिन का समय दिया जाता है ।

[यह बात सुनकर बैजू बहुत गुस्सा हो गया और पैर पटक कर चला गया ।]

बैजू के घर का दृश्य

बैजू - (कीरू से) देखा तुमने, देखा कैसे रामदीन ने मुझे धोखा दिया । मैंन सोचा कि मेरा मित्र है वह मेरा ही साथ देगा । पर उसने कैसे अपना रंग बदल लिया । छी:।

कीरू - जो आपने किया, क्या वह धोखा नहीं था ।

बैजू - तुम कहना क्या चाहती हो ? बाहर तो बाहर वाले, घर क़ाले भी मेरे दुश्मन बन गए हैं । हूँ ....।

LOKUS

रास्ते का दृश्य

रामदीन - अरे बैजू क्या हुआ ? तु मुझसे बात क्यों नहीं करता । मुझसे कुछ भूल हो गयी है क्या ?

बैजू - मुझसे क्या पूछते हो रामदीन । ख़ुद को देखो । तुमने मुझसे धोखा किया है ।

रामदीन - नहीं बैजू, यह तुम क्या कह रहे हो ? मैंने कोई धोखा नहीं किया । मैंने तो उस पद की इज़्ज़त रखी और सही फैसला दिया ।

बैजू - सही फैसला, रामदीन तुमने अच्छा नहीं किया । तुम मेरे सबसे बड़े दुश्मन हो । यदि मुझे मौका मिला तो मैं तुमसे इसका बदला जरुर लूँगा । **[कहकर चला जाता है]**

पंचायत का दृश्य

[सभी लोग बैठे हैं । रामदीन फ़रियादी के रूप में खड़ा है ।]

रामदीन - पंचों, मेरा न्याय करो । साहू चंद ने मुझसे गाय खरीदा था पर ले जाते समय उससे रास्ते से ही गाय कहीं भाग गई । और अब वह कहता है कि मुझे पैसे वापस चाहिए । अब भला मैं पैसे कैसे लौटाऊँ । मेरी तो बस वही एक सम्पत्ति थी । रास्ते से वह भाग गई तो इसमें मेरी क्या गलती है । अब आप ही बताइए । आप ही न्याय कीजिए ।

साहू चंद - हाँ, हाँ, फैसला कीजिए पंचों । पर सरपंच कौन बनेगा ?

रामदीन - तुम ही किसी चुन लो कि सरपंच पद के लिए । **[साहू चंद जानता था कि बैजू उसका दुश्मन है और वह उसके खिलाफ़ ही निर्णय देगा ।]**

साहू चंद - ठिक है, तो मैं बैजू को सरपंच पद के लिए चुनता हूँ । **[सब सुनकर अबाक् रह गए, रामदीन समझ गया कि अब उसका निर्णय उसके पक्ष में नहीं होगा।]**

रामदीन - ठिक है । जैसी तुम्हारी मर्ज़ी । मैं भी बैजू को ही सरपंच मानता हूँ ।

बैजू - [कुछ विचार करते हुए] हमारा निर्णय यह है कि एकबार गाय बेच देने के बाद सारा उत्तरदायित्व खरीददार का होता है । अत: गाय का मूल्य वापस करने की कोई जरुरत नहीं है । **[यह फैसला सुनते ही सब आश्चर्यचकित रह गए । बैजू ने रामदीन को गले से लगा लिया । उसने अपनी भूल मान ली ।]**

बैजू - मुझे माफ़ करना रामदीन । मैंने जो किया वह द्वेष में आकर किया । पर मैंने आज जाना कि न्यायाधिश का पद दोस्ती और दुश्मनी जैसे रिश्ते से ऊपर होता है ।

XXXX समाप्त XXXX

Lokus